संपादकीय

ज्ञानपीठ पुरस्कार के बहाने

गत महीनों में भाषा, साहित्य और समाज के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण घटनाएँ घटीं, जिन्होंने न केवल सृजनात्मकता को प्रोत्साहित किया बल्कि सामाजिक चेतना को भी नया स्वरूप दिया। भाषा विज्ञानियों और तकनीकी विशेषज्ञों ने मिलकर हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में नई शब्दावली विकसित करने के प्रयास किए हैं। विशेष रूप से, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और मशीन लर्निंग से जुड़े कई नए शब्द हिंदी में गढ़े गए हैं, जिससे तकनीकी संवाद आसान हो सके। हाल ही में यूनेस्को ने भारत की कुछ लुप्तप्राय भाषाओं को संरक्षित करने के लिए विशेष कार्यक्रम की घोषणा की है। इसमें सांस्कृतिक महत्त्व की भाषाओं को डिजिटली संरक्षित करने की पहल की गई है।

साहित्य अकादमी ने विभिन्न भारतीय भाषाओं के लेखकों को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए पुरस्कृत किया। इस बार हिंदी साहित्य में चर्चित उपन्यासकार को यह सम्मान प्राप्त हुआ, जिनकी रचनाएँ समकालीन समाज की समस्याओं को उजागर करती हैं।

वर्ष 2024 के लिए 59वां ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किए जाने की घोषणा की गई है। भारतीय ज्ञानपीठ ने एक बयान में यह जानकारी दी है। ज्ञानपीठ पुरस्कार भारतीय साहित्य का सर्वोच्च पुरस्कार है, जो प्रत्येक वर्ष भारतीय भाषाओं के किसी एक विशिष्ट साहित्यकार को प्रदान किया जाता है। बयान के मुताबिक, विनोद कुमार शुक्ल जी को हिंदी साहित्य में उनके अद्वितीय योगदान, सृजनात्मकता और विशिष्ट लेखन शैली के लिए इस सम्मान के वास्ते चुना गया है। यह भारतीय साहित्य का सर्वोच्च सम्मान है, जिसे पाकर उन्होंने हिंदी साहित्य की समृद्धि को और भी ऊँचाइयाँ प्रदान की हैं। उनकी लेखनी की विशेषता उनकी **सरल भाषा, गहरी संवेदनशीलता और अद्भुत कल्पनाशीलता** में निहित है।

विनोद कुमार शुक्ल का जन्म 1 जनवरी 1937 को **राजनांदगांव, छत्तीसगढ़** में हुआ था। वे हिंदी साहित्य के उन अनूठे रचनाकारों में से एक हैं जिन्होंने **कविता, उपन्यास और गद्य** की दुनिया में अपना विशिष्ट स्थान बनाया। उनकी रचनाओं में आम आदमी के संघर्ष, जीवन की छोटी-छोटी खुशियों और समाज की संवेदनाओं का सुंदर चित्रण मिलता है। उनकी **प्रमुख रचनाएँ - कविता संग्रह:** जहाँ मैं खड़ा हूँ (1979), वृक्ष पर पहाड़ (1980), इतना कुछ खो गया (1992) **उपन्यास:** नौकर की कमीज़ (1979), दीवार में एक खिड़की रहती थी (1997), खिलेगा तो देखेंगे (2014) उनकी कहानियों और उपन्यासों में **गहन मानवीय संवेदनाएँ,**

सरल भाषा और मार्मिक व्यंग्य देखने को मिलता है। **उनकी लेखनी की विशेषताएँ है सरल भाषा में गहरी बातें**: उनकी रचनाएँ सहज भाषा में लिखी गई हैं, लेकिन उनके अर्थ बहुत गहरे होते हैं। **कल्पनाशीलता और प्रतीकात्मकता**: वे साधारण जीवन की घटनाओं को असाधारण रूप में प्रस्तुत करने की क्षमता रखते हैं। **सामाजिक यथार्थ और मानवीय संवेदनाएँ**: उनकी कहानियों और उपन्यासों में आम आदमी के जीवन की झलक मिलती है। ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त करना न केवल विनोद कुमार शुक्ल के लिए बल्कि **पूरे हिंदी साहित्य जगत के लिए गर्व की बात है**। उनकी रचनाएँ पाठकों को सोचने और महसूस करने के लिए मजबूर करती हैं। वे उन साहित्यकारों में से हैं जिन्होंने हिंदी भाषा में **नई संवेदना और नई दृष्टि** को जन्म दिया। उनकी लेखनी आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी।

ज्ञानपीठ का सम्मान प्राप्त होने पर उनकी जो पहली प्रतिक्रिया ती वह यह थी कि, 'मुझे लिखना बहुत था, बहुत कम लिख पाया, मैंने देखा बहुत, सुना भी मैंने बहुत, महसूस भी किया बहुत। लेकिन लिखने में थोडा ही लिखा। कितना कुछ लिखना बाकी है, जब सोचता हूँ तो लगता है कि बहुत बाकी है। इस बेचे हुए को मैं लिख लेता, अपने बचे होने तक मैं बचे लेखक को शायद नहीं लिख पाऊँगा। तो मैं क्या कहूँ, मैं बड़ी दुविधा में रहता हूँ। मैं अपनी जिंदगी का पीछा अपने लेखन से करना चाहता हूँ। लेकिन मेरी जिंदगी कम होने के रास्ते पर तेजी से बढ़ती है और मैंने लेखन को उतनी तेजी से बढ़ा नहीं पाता, तो कुछ अफोसस भी होता है। यह पुरस्कार बहुत बड़ा पुरस्कार है। मेरी जिंदगी में यह जिम्मेदारी का अहसास है मैं उसे महसूस करता हूँ और अच्छा तो लगता है। खुश होता हूँ। बड़ी उथल पुथल है। महसूस करना कि यह पुरस्कार कैसे लगा। बहुत बढ़िया लगा। कैसे लगा तो कहने मेरे पास शब्द नहीं है। मीठा लगा कैसे कहूँ तो मैं शुगर का पेशंट हूँ। बस अच्छा लगा।" आखर परिवार की ओर से विनोद कुमार शक्ल जी का अभिनंदन।

"आखर" के इस अंक में शोधालेखों के साथ साथ कविता, कहानी और लेख शामिल है। आशा है आपको यह अंक पसंद आएगा। आपका स्नेह और सहयोग हमें हमेशा मिलता रहे ताकि हम **'आखर'** के माध्यम से साहित्य की सेवा कर सकें।

इति नमस्कारन्ते।

प्रधान संपादिका
प्रतिभा मुदलियार

प्रो. प्रतिभा मुदलियार, "संपादकीय" आखर हिंदी पत्रिका, खंड 5 /अंक 1/मार्च 2025,1–2.

https://doi.org/10.5281/zenodo.15081333

This work is licensed under CC BY-NC 4.0